SEMESTER-2 2nd Semester UNIT-5 Page (1)

TOPIC- शिक्षण प्रभावशीलता

Teaching effectiveness

Date 27.04.20

BY- Dr. Shyam Bihari Chaudhary

शिक्षण तथा अधिगम में चोली-दामन का साथ कहा जाता है। अधिगम कराने के लिए शिक्षण किया जाता है एवं शिक्षण की परिणति अधिगम के रूप में सामने आती है। अधिगम के बिना शिक्षण व्यर्थ माना जाता है एवं औपचारिक शिक्षा में अधिगम हेतु शिक्षण जरूरी होता है। इसलिए शिक्षण की प्रभावशीलता एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष के रूप में सामने आती है। एच. सी. मैरीसन के अनुसार "शिक्षण अधिक परिपक्व व्यक्तित्व के बीच बनाया गया एक अन्तरंग सम्पर्क है जिसे बाद वाले की शिक्षा को अग्रसर करने के लिए प्रकल्पित किया जाता है"। एन. एल. गेज के अनुसार "शिक्षण किसी अन्य व्यक्ति की व्यवहार क्षमताओं में बदलाव लाने के लिए किया गया एक अन्तर्वैयक्तिक प्रभाव है।" बी. ओ. स्मिथ के अनुसार "शिक्षण को अधिगम हेतु की जाने वाली क्रियाओं की एक प्रणाली कहा जा सकता है।" कुछ भी क्यों न हो शिक्षण सदैव अधिगम में फलीभूत होता है एवं सदैव ही उद्देश्य अथवा पाठ्यक्रम केन्द्रित रहता है। स्पष्ट है कि शिक्षण प्रक्रिया के दौरान शिक्षक व शिक्षार्थी शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परस्पर अन्तर्क्रिया करते हैं जिसकी परिणति अधिगम रूपी प्रतिफल के रूप में होती है। शिक्षण की प्रभावशीलता को अनेक कारक या अवयव प्रभावित करते हैं। इनमें से कुछ कारक शिक्षार्थी से सम्बन्धित होते हैं, कुछ कारक अध्यापक से सम्बन्धित होते हैं एवं कुछ कारक पाठ्यवस्तु व परिवेश से सम्बन्धित होते हैं। शिक्षार्थियों का बौद्धिक स्तर, पूर्वज्ञान, व्यक्तित्व, अभिरुचि, मूल्य, विश्वास, अभिवृत्ति, वैयक्तिक भिन्नता आदि शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अध्यापक की शिक्षण सामर्थ्य, विषयगत ज्ञान, व्यक्तित्व, कक्षा नियंत्रण, शिक्षण कौशल आदि कारक शिक्षण प्रक्रिया में सार्थक योगदान करते हैं। पाठ्यवस्तु का स्तर, शैक्षणिक उद्देश्य, शिक्षण सामग्री, विद्यालयी परिवेश आदि बातें भी शिक्षण प्रक्रिया नियोजन व कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण होती हैं।

Scanned with CamScanner